साहित्यसुधा

साहित्यकारों की वेबपत्रिका

साहित्यकारों की रचना स्थली

वर्ष: 3, अंक 56, मार्च(प्रथम) , 2019

मज़हब ही सिखाता

डॉ. रामप्रकाश सक्सेना

ऋतुपर्णा (संबोधन में केवल रितु) लगभग एक अर्ध-शताब्दी पूर्व आसनसोल (पश्चिम बंगाल) से अमेरिका के परड्यू विश्वविद्यालय से एम. एस. करने आई थी। सोच कर तो यह आई थी की एम. एस. की डिग्री प्राप्त कर भारत में नौकरी करेगी। मगर दुनिया की वास्तविकता तो यही है कि मनुष्य सोचता कुछ है, और होता कुछ और ही। (मैन प्रोपोज़ेज़, गॉड दिस्पोज़ेज़)

रितु सुंदर तो थी ही, साथ ही मितभाषी भी थी। साधारण बुद्धि की रितु अपनी मेहनत और लगन के कारण हर परीक्षा में प्रथम श्रेणी ही आती थी। रितु पर रामकृष्ण मिशन का बहुत प्रभाव था। क्योंकि उसके माता-पिता दोनों ही इस मिशन से हृदय से जुड़े थे। परड्यू विश्वविद्यालय ज्वाइन करने के बाद कुछ ही महीनों बाद कब और कैसे उसकी पहचान अशरफ नाम के एक पाकिस्तानी खूबसूरत युवक से हो गई। शीघ्र ही दोस्ती बेस्ट फ्रेंड में बदल गई। बेस्ट फ्रेंड से प्रेमी और प्रेमिका कब और कैसे बन गए इसका आभास दोनों को कुछ दिनों बाद महसूस हुआ।

दोनों ने आपस में शादी करने का फैसला कर लिया। इसके लिए दोनों ने अपने माँ-बाप से सहमति माँगी। रितु के पिता का उत्तर आया हम संस्कारी हिंदू हैं। शुद्ध शाकाहारी। तू इतनी पढ़ी-लिखी है, फिर भी एक गोमांस खाने वाले से शादी करने को तैयार कैसे हो गई? यह संबंध तोड़ दे।

तू यहां आ जाए। हम तेरी शादी उससे अच्छे लड़के से धूमधाम से कर देंगे। अगर तू अपनी ज़िद पर अड़ी रही और एक मुसलमान से शादी कर ली तो हम समझ लेंगे कि तू हमारी संतान है ही नहीं। फिर हम तुमसे कोई रिश्ता नहीं रखेंगे। समझेंगे कि तू हमारे लिए मर गई।

अशरफ के पिता का उत्तर आया। अगर वह लड़की इस्लाम को अपनाने को तैयार हो, तो उसे यहां ले आओ। हम तुम्हारा निकाह यहाँ धूमधाम से करा देंगे।

रितु धर्म परिवर्तन को तैयार नहीं थी। दूसरे अशरफ भी नहीं चाहता था कि प्रेम और शादी में मज़हब कोई बाधा बने। प्रेम ने खानदानी रिश्तों पर विजय पा ली और दोनों ने अमेरिका में ही शादी कर ली।

भाग्य ने दोनों का साथ दिया। एम. एस. करने के बाद दोनों का कैलीफ़ोर्निया स्टेट में जॉब मिल गया- एक गूगल में और दूसरे का जेपी मोरगान चेस में। दोनों ने मिलकर फ़ॉस्टर सिटी में एक मकान खरीद लिया। यह स्थान ऐसा था, जहाँ से दोनों ही अपने कार्य स्थल पर आधा-पौन घंटे की ड्राइव से पहुँच सकते थे।

अगले वर्ष रितु ने एक पुत्री को जन्म दिया। पुत्री का नाम रखने में थोड़ी समस्या आ गई। अशरफ़ उसका नाम मुसलमानों और रितु हिंदू नाम देना चाहती थी। उनके एक दोस्त ने यह समस्या हल कर दी और सीमा नाम रखा दिया। यह नाम दोनों धर्मों में चलता है।

सीमा को मां बाप दोनों से ख़ूब प्यार मिला। समय गुजरते देर नहीं लगती। सीमा ने संगीत में अपना करियर बनाया। उसने भारतीय और पश्चिमी दोनों संगीत विधाओं में ट्रेनिंग ली। मां के प्रभाव से उसने रवींद्र संगीत में भी प्रवीणता प्राप्त की। अल्प समय में वह अपनी प्रतिभा से

काफी धन कमाने लगी। एक कंसल्ट में उसकी मुलाकात एक अमेरिकन गायक विलियम से हो गई। पहचान, प्रेम में और प्रेम विवाह में परिवर्तित होते देर न लगी। सीमा अपने पति के साथ रहने लगी। अशरफ को उसके पिता ने यह कह कर पाकिस्तान बुला लिया कि उसकी मां को कैंसर हो गया है और वह मरणासन्न है। रितु ने ज़िद की कि वह भी अशरफ के परिवार से मिलना चाहती है। अशरफ ने यह कहकर समझा दिया, मेरे वालदैन(माँ बाप) बहुत कंजरवेटिव हैं। वह तुम्हें कभी स्वीकार नहीं करेंगे। हम लोग बड़े मजे से रह रहे हैं, अच्छे भले में बर्र के छत्ते में क्यों हाथ डाला जाए। पाकिस्तान जाने के बाद कुछ दिनों तक अशरफ के फोन रितू के पास आते रहे। उसके बाद यकायक अशरफ के फोन आना बंद हो गए। रितु ने कुछ हफ्तों तक इंतजार किया। फिर एक दिन उसने अशरफ के घर फोन किया 'मैं अशरफ के ऑफिस की कलीग बोल रही हूं। ऑफिस वाले जानना चाहते हैं कि अशरफ साहब अमेरिका कब आ रहे हैं।

उत्तर मिला, 'मैं अशरफ का वालिद बोल रहा हूं। पिछले हफ्ते एक एक्सीडेंट में उनका इंतकाल हो गया। मैडम मरने से पहले उसने बताया था की अमेरिका में उसने किसी लड़की से शादी कर ली है, अगर उसको आप जानती हों, तो उस तक यह खबर पहुंचा दीजिए। चूँकि अशरफ़ का रितु से निकाह नहीं हुआ, इसलिए हम ऐसी शादी को नहीं मानते।'

'हाँ, उसको यह भी बता दीजिए कि हम लोग बहुत पैसे वाले हैं। इसलिए अशरफ की अमेरिका की जायदाद में कुछ नहीं चाहते। अशरफ की सारी जायदाद वह नामाकूल रख सकती है। हम उससे कोई रिश्ता नहीं मानते।'

ऐसे में रितु के लिए कहने को कुछ नहीं रहा। फ़ोन के बाद वह घंटो रोती रही। दूसरे दिन हालत इतनी खराब हो गई की हॉस्पिटल में भर्ती होना

पड़ा ।पति की मौत से उसको इतना बड़ा शॉक लगा की वह असामान्य हो गई। न्यूयार्क से सीमा भी आ गई।

एक महीने बाद सीमा ने माँ कहा की वह उसके साथ न्यूयार्क चले। रितु ने यह कहकर मना कर दिया की इस मकान को वह मरने तक नहीं छोड़ सकती। यहाँ ज़र्रेज़र्रे में अशरफ की यादें जुड़ी हैं। तब सीमा ने समझाया की इतने बड़े मकान में वह अकेली बोर हो जाएगी। वह कुछ इंडियन लड़कियाँ पेइंग गेस्ट के रूप में रख ले। यह बात रितु को भी ठीक लगी। सीमा ने ऐड देकर तीन लड़कियों को रख लिया। सीमा की एक सहेली माउंटेन व्यू में रहती थी उसको भी मम्मी के घर रख दिया। उसका नाम प्रज्ञा था। वह अमेरिका में ही पैदा हुई थी। उसके माता-पिता मर चुके थे। उसको रितु में अपनी माँ का प्यार दिखने लगा। एक लड़की कश्मीर की थी, जिसका नाम आएशा था और तीसरी मंजुला और चौथी ग्रेसी । सीमा ने ही एक कुक प्रबंध कर दिया। उसके बाद सीमा न्यूयार्क चली गयी। कुछ ही महीनों में रितु को एक परिवार सा लगने लगा। सभी लड़कीयाँ ब्रेकफास्ट और डीनर साथ-साथ करती थी। रितु का व्यवहार भी माँ जैसा था। इन लड़कियों आने से रितु अपने सब दुख भूल गई। और उसे एक भरे-पूरे परिवार का आनंद मिलने लगा। सभी सहेलियों में आपस में बहुत प्रेम था। साथ - साथ ही मार्केटिंग को या कहीं सैर-सपाटे को चली जाती। कभी-कभी रितु भी उनके साथ चली जाती।

इस बार क्रिसमस की छुट्टियों में एक महीने के लिए सभी लड़कियों ने भारत जाने का प्रोग्राम बनाया। तय हुआ की सब एक साथ दिल्ली जाएंगे और लौटकर सभी दिल्ली एयरपोर्ट से वापस आएंगे। दिल्ली से आएशा कश्मीर चली जाएगी, ग्रेसी केरला, मंजुला इलाहाबाद और दीक्षा जयपुर चली जाएँगी।

सभी सहेलियाँ पूर्व निश्चित तारीख को भारत चली गईं। रितु और प्रज्ञा रह गईं। रितु अकेला महसूस करने लगी और दुखी रहने लगी। अतः प्रज्ञा रितु आंटी को लेक के किनारे एक रिसॉर्ट में लेकर चली गई। वहाँ दोनों ने योग क्लास ज्वाइन कर लिया।

सभी लड़कियों के अमेरिका लौटने के एक दिन पहले रितु और प्रज्ञा घर लौट आए। नियमित योग और संतुलित तथा पौष्टिक आहार के कारण दोनों स्वस्थ्य महसूस करने लगीं। दोनों ने केवल शाकाहारी भोजन लेने का प्रण भी कर लिया। भारत से लौटने के बाद सभी लड़कियों को जेट लैग के कारण नॉर्मल होने के लिए दो-तीन लगे। उसके एक-दो दिन सब ने भारत के अपने-अपने अनुभव सुनाए। अगले रविवार से सभी अपने अनुभवों का प्रैक्टिकल करने लगीं। हमेशा की तरह इस रविवार को ग्रेसी का बॉयफ्रेंड गिरीश हिंदी मूवी दिखाने के लिए घर आया। ग्रेसी ने कहा, “इंडिया में इस बार मैं अपनी पड़ोसन एलिज़ाबेथ के साथ रेगुलर चर्च जाने लगी। वहाँ मुझे महसूस हुआ मैं गॉड से कितनी दूर थी। मैंने कई बार पाप किया। सबसे बड़ा पाप तो मैंने गिरीश तुम्हारे साथ सेक्स किया। मैंने अपने पापों की मुक्ति के लिए चर्च में कन्फेशन भी कर लिया। यह भी शपथ ली की किसी से भी विवाहेतर संबंध नहीं रखूँगी। इसलिए मैं तुम्हारे साथ नहीं जा सकती। प्लीज़, गिरीश मुझे माफ़ कर देना।

गिरीश की ग्रेसी बेस्ट फ्रेंड थी| उसे बड़ा शॉक लगा। लेकिन वह यह भी समझ गया कि भारत में जाकर ग्रेसी ने धर्म का ओवरडोज़ ले लिया है। अब इससे कुछ कहने का कोई लाभ नहीं है। गिरीश ने आंटी से कहा, “आंटी, जब ग्रेसी के धर्म का नशा उतर जाए, तब मुझे फ़ोन कर देना|”

रितु ने हामी भर दी। गिरीश दुखी मन वहाँ से चला गया।

हमेशा की तरह लगभग 6 बजे आएशा का फ्रेंड ओमकार कौल आएशा को बाहर डिनर के लिए लेने आया। आएशा ने यह कहकर जाने से इनकार

कर दिया कि कश्मीर में मेरे इकलौते भाई अहमद को हिंदू आर्मी ने मार डाला।

कौल : तुम्हारा भाई आतंकवादी होगा। दूसरे , इंडिया में कोई हिंदू आर्मी नहीं है। इंडियन आर्मी में सभी धर्मों के लोग हैं।

आएशा : ' मेरा भाई जिहादी था। कश्मीर की आज़ादी के लिए लड़ रहा था।'

कौल : ' कश्मीर में सफरर तो हम कश्मीरी पंडित हैं, जिनको कश्मीरी मुसलमानों ने शरणार्थी बना दिया। आएशा, तुम्हें हो क्या गया है ? हम लोग बेस्ट फ्रेंड हैं। मज़हब बीच में कहा से आ गया। इकबाल ने यह कहा था- 'सारे जहाँ से अच्छा हिंदुस्तान हमारा। मज़हब नहीं सिखाता आपस में बैर रखना। '

प्रज्ञा जो वहीं बैठी थी, बोल उठी - 'मज़हब ही सिखाता आपस में बैर रखना|' अगर ऐसा न होता तो पाकिस्तान कैसे बन जाता? हर मज़हब के हाथी की तरह दो दांत होते हैं -- एक खाने के और दिखाने के और। हर मज़हब प्रेम की ही बात करता है। फिर आपस में लड़ते क्यों हैं? बच्चन ने ठीक ही कहा है – मंदिर मस्जिद बैर कराती। कभी आपने पादरी, मुल्ला व पुजारी को दोस्त बनते देखा है|'

रितु ने कहा 'ओमकार इस तरह की बहस का कोई अंत नहीं। तुम आशी की बनाई बढ़िया चाय पियो और मस्त रहो। '

सभी मज़हब की बात भुलकर चाय का आनंद लेने लगे।

रात को डिनर पर फिर चर्चा शुरू हो गई। दीक्षा ने कहा, "इस बार मैंने मुनियों का सत्संग ज्वाइन कर लिया था। मेरी माँ तो वहाँ पहले से जाती थी। पढ़ाई के कारण मुझे वहाँ जाने का अवसर ही नहीं मिलता था।

इस बार मैंने पूरे समय सत्संग किया। मुझे यह अहसास हुआ कि मैं अपनी अज्ञानता के कारण जैन धर्म से कितनी दूर हो गई थी। मैं मूली, गाजर, प्याज, लहसन खाने लगी थी। अब मैंने ये सब छोड़ दिया। यह लगता तो बहुत अच्छा है। पर कभी-कभी यहाँ नॉनवेज बन जाता है। मैं खाती तो नहीं फिर भी कुसंग के कारण कभी भी मैं अपने धर्म से च्युत हो सकती हूँ। इसलिए मैं किसी जैन परिवार का पेइंग गेस्ट बनने की कोशिश कर रही हूँ। दूसरे दिन प्रातः आएशा अपने कमरे में नमाज़ पढ़ रही थी। उस समय मंजुला अपने कमरे में मंजीरे बजाते हुए ' हरे-राम-हरे- कृष्ण-कृष्णा हरे-हरे' कीर्तन करने लगी। आएशा को कीर्तन की आवाज से नमाज में खलल पड़ा, तो उसने मंजुला के कमरे में जाकर कीर्तन न करने को कहा। इसी बात पर दोनों में खूब झगड़ा हुआ। दोनों ने झगड़े का अंत इस वाक्य से किया। 'अब या तो तू रहेगी इस घर या मैं।'

धीरे-धीरे आपस में दूरियां बढ़ती गई। एक डिनर पर प्रज्ञा को छोड़कर सब लड़कियों ने आंटी को अल्टिमेटम दे दिया की अगले महीने की पहली तारीख को सुबह हम सभी यह घर छोड़ देंगे। रितु की आँखों में आँसू आ गए और वह बीच में ही डिनर छोड़कर अपने कमरे में चली गई। सभी लडकियों ने चुपचाप अपना डिनर लिया और कमरों में चली गईं।

महीने की तीस तारीख को रितु ने कुक की सहायता से बहुत शानदार शाकाहारी भोजन बनवाया। इस बार डिनर पर पहले जैसी रौनक नहीं थी। अंत में रितु ने सबको संबोधित किया, ' तुम लोग कल यह घर छोड़ रहे हो। मेरी शुभकामनाएँ और आशीर्वाद हमेशा तुम्हारे साथ रहेगा। भविष्य में कभी मेरी ज़रूरत महसूस हो तो निःसंकोच मुझे याद रखना। आप सब लोगों को आम और मेरे बनाए पोहे अच्छे लगते हैं। कल मैं ये दोनों चीज़े टेबल पर सजाकर रख दूँगी। जाने से पहले तुम सब ब्रेकफास्ट करके जाना। मैं कल ब्रेकफास्ट के समय नहीं रहूँगी, क्योंकि मैं तुम लोगों के जाते देखने का दुख नहीं झेल पाऊँगी। इसलिए अभी से गुडबाय, भगवान सबका भला करे|'

इतना कहकर रितु अपनी आँखें पोछती हुई अपने कमरे में चली गई।

थोड़ी देर सभी खामोश बैठै रहे। अब प्रज्ञा ने मुँह खोला। मैं जो कुछ कह रही हूँ, उसे ध्यान से सुनिए। जाते-जाते मैं धर्म पर बहस नहीं करना चाहती। आप सिर्फ सोचिए- आप लोग इंडिया जाने के पहले सब इंडियन थे। आपकी आएडेंटिटी इंडियन होने से थी। ऐसा क्या हो गया की इंडिया से लौटने के बाद एक जैन हो गई, एक मुसलमान, एक कृष्ण भक्त हिंदू, एक क्रिश्चियन। उससे पहले भी तो आप अपने-अपने धर्म को मानते थे। कभी कोई कन्फिलिक्ट नहीं हुआ। लौटकर सब कट्टरवादी हो गए। क्या मंजुला आएशा की नमाज के पहले या बाद में हरे कृष्णा का जाप नहीं कर सकती थी। क्या दीक्षा के कारण हम लोग यह तय नहीं कर सकते कि दिक्षा के कारण घर में केवल शाकाहारी खाना बने। रितु आंटी भी तो शाकाहारी हैं और बाकी हम लोग होटल में नॉनवेज खा आया करें। आंटी के पति तो मुसलमान थे। उनकी बेटी ने क्रिश्चियन से शादी कर ली। धर्म के ऊपर कभी कन्फिलिक्ट नहीं हुआ। छोड़िए इन सब बातों को। आप सब लोग धर्म का पर्दा हटाकर कर केवल कॉमनसेन्स का उपयोग करें। क्या आपको कही भी आंटी का माँ जैसा अनमोल प्रेम मिल पाएगा। यदि हाँ, तो आप कल चली जाइए। नहीं तो कल ब्रेकफास्ट की टेबल पर सभी को होना चाहिए। सभी धर्मों में कुछ हो न हो पर प्रेम तो सबमें है।

इतना कहकर प्रज्ञा अपने कमरे में चली गई। सभी लड़कियाँ लगभग रात दो बजे तक इस मसले पर डिस्कशन करती रहीं।

सुबह ब्रेकफास्ट पर सब लड़कियाँ थीं, पर आंटी नहीं थीं। प्रज्ञा को छोड़कर सभी लड़कियाँ आंटी के कमरे में गईं। वहाँ आंटी स्वामी विवेकानंद के फोटो के सामने रो रही थीं।

सभी लड़कियों ने एक स्वर में कहा 'आंटी आप ब्रेकफास्ट के लिए चलिए|'

आंटी ने कहा 'आप लोग चली जाएँगी, तब मैं बाद में कर लूँगी'।

सब लड़कियों ने एक स्वर में कहा, 'आंटी, घर छोड़कर जा कौन रहा है?'

आंटी भौंचक्की होकर बोल उठीं ' क्या!'

सभी लड़कियाँ फिर एक स्वर में 'आंटी, इस स्वर्ग को छोड़कर कोई तो नहीं जा रहा है। अब तो आप चलिए। हम आपके साथही हमेशा की तरह ब्रेकफास्ट करेंगे।'

'इतना बड़ा परिवर्तन हो कैसे गया?'

सबका उत्तर था 'प्रज्ञा, प्रज्ञा दीदी ....'

****

कृपया रचनाकार को मेल भेज कर अपने विचारों से अवगत करायें